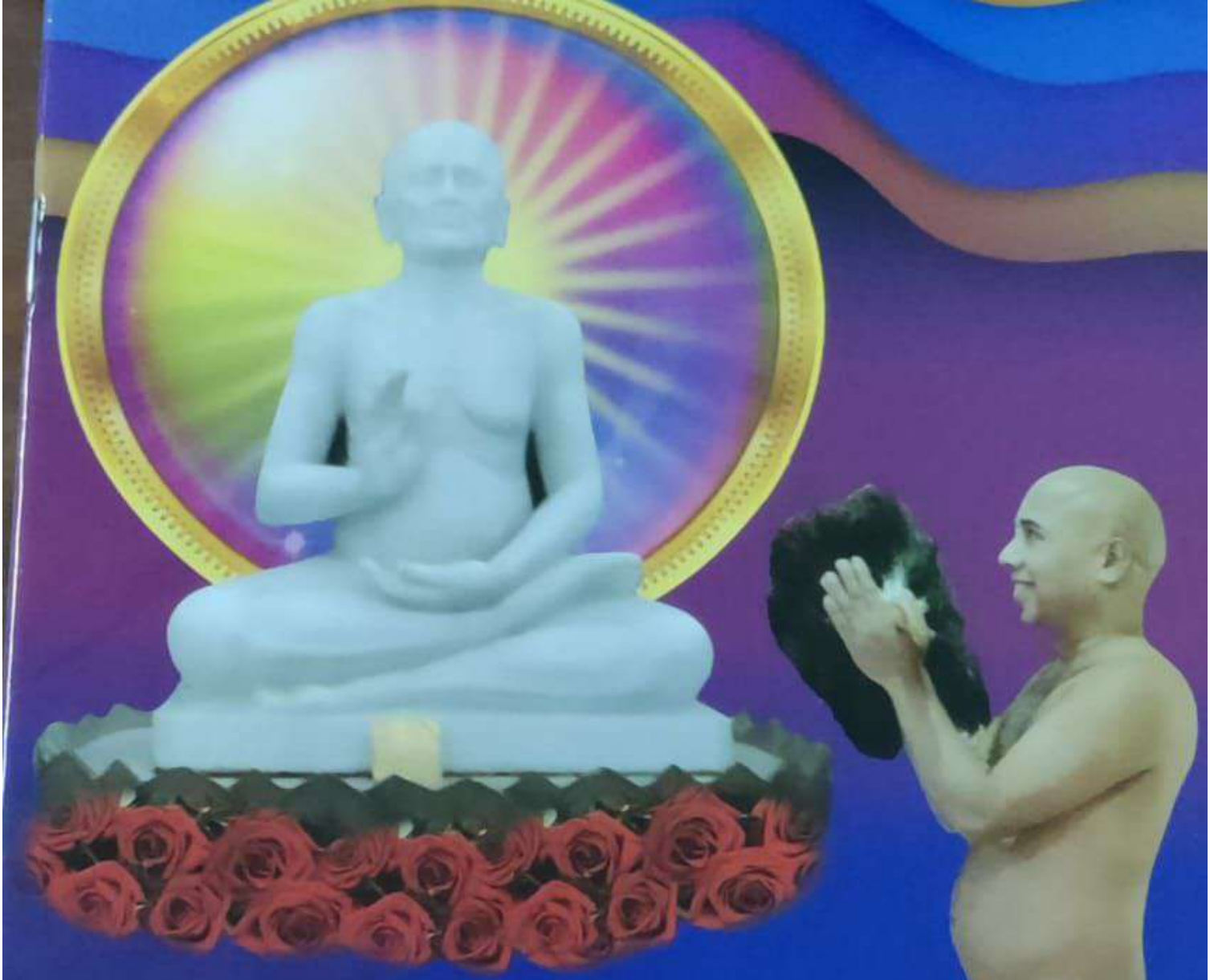

प.पू. चारित्र चक्रवर्ती

आचार्य श्री शांतिसागर जी विधान

आशीर्वाद एवं सम्पादन - दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री - आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प.पू. चारित्र चक्रवर्ती
आचार्य श्री शांतिसागर जी विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

आशीर्वाद एवं संपादन
आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी दिगम्बर
जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, धर्मतीर्थ
पोस्ट-कचनेर (गट नं. 11-12), जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
www.jainacharyaguptinandiji.org
E-mail : dharamrajshree@gmail.com

शान्तिसागर विधान अब आपके लिए

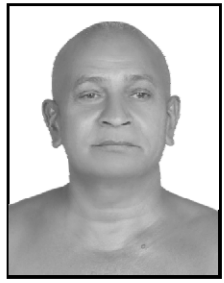

बडी प्रसन्नता की बात है। हमारी शिष्या **'आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी'** ने पहले अनेक भजन, पूजन, विधानों और चारित्र वर्द्धक कहानियों की अनेक पुस्तकों का लेखन किया है। अब चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी के संयम शताब्दी वर्ष महोत्सव के उपलक्ष्य में आपने शान्तिसागर विधान नामक पुस्तक को लिखा है। इसमें धर्म सूर्य आचार्य श्री शान्तिसागर जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को ध्यान में रखते हुए बहुत ही सुन्दर विधान की रचना की है ये पुस्तक आचार्य श्री के भक्तों को अवश्य पसंद आयेगी आप सभी इसका अवश्य लाभ लें। हमारे शिष्य **'आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी'** ने इसका संपादन किया है।

संपादक और लेखिका दोनों को हमारा आशीर्वाद। ग्रंथ के पुण्यार्जक, विधान करने वाले इन्द्र इंद्राणी, प्रकाशक आदि सभी को हमारा आशीर्वाद।

ग.गणधराचार्य कुंथुसागर
श्री क्षेत्र कुंथुगिरी

आचरण की पाठशाला

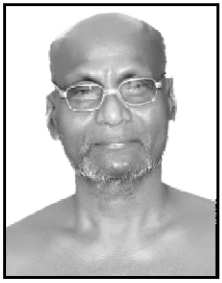

हमारी शिष्या **'आर्यिकाश्री आस्थाश्री'** माताजी ने हमारे समान ही ज्ञान साधना को अपनाया है।बचपन से ही अनेक भजन, पूजन, कविता, विधान व कहानियों की रचना करते हुए अब आपने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी के संयम शताब्दी वर्ष में उनके प्रति अपनी भक्ति दर्शाते हुए आचार्य श्री शान्तिसागर विधान का लेखन किया है।ये आज के युग में बहुत ही आवश्यक है। मोक्ष मार्ग में चलने वाले जीवों के लिए यह बहुत ही जनोपयोगी सिद्ध होगा ।

माताजी को जिनवाणी की सेवा के फलस्वरूप आगे भव में केवलज्ञान की प्राप्ति हो यही उनके लिए आशीर्वाद है। अन्य सभी पुण्यार्जक, प्रकाशक, मुद्रक, पाठक को हमारा आशीर्वाद शुभकामनाएँ।

–वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी

जीवंत सूर्य

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महामुनिराज जैन संस्कृति के लिए बीसवीं शताब्दी के चलते फिरते जीवंत सूर्य थे। जिन्होंने अपने चारित्रिक प्रकाश से समाज में व्याप्त शिथिलता के अंधकार को दूर किया। उन्होंने स्वयं को तपाकर अपने अनुभव से कठिन मुनिधर्म को जन-जन तक पहुँचाया है। युवाओं को मुनिधर्म के लिए प्रेरित किया है। वे जैन धर्म के सच्चे अर्थों में संरक्षक हैं। जिन्होंने अपने जीवन की कीमत देकर मुनिधर्म और श्रावक धर्म का संरक्षण किया है। इसलिए आज पूरे विश्व में उनके संयम का शताब्दी वर्ष महोत्सव मनाया जा रहा है। आज लगभग सभी मुनिभक्त, दानशूर,व विद्वान अपने-अपने तरीकें से मना रहे हैं इसी शृंखला में हमारे संघ की विद्वान् **'आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी'** ने वर्ष 2017 में ही **'क्षुल्लक श्री सुधर्मगुप्त जी'** के आग्रह पर **'चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर विधान'** की रचना की है। जो अब आपके बीच प्रकाशित होकर आ गया है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि अत्यंत सरल शब्दों में उनके जीवन चरित्र को दर्शाने वाले इस विधान का आप सभी भरपूर आनंद लेंगे। विधान लेखिका माताजी को हमारा बहुत सारा आशीर्वाद। इस विधान के पुण्य से उन्हें भी गुरु के समान गुणों की प्राप्ति हो। विधान लिखने का आग्रह करने वाले क्षुल्लक श्री सुधर्मगुप्तजी को विशेष आशीर्वाद जिनकी प्रेरणा से यह विधान बना। उनकी मुनिदीक्षा का मार्ग प्रशस्त हो। विधान के पुण्यार्जक, प्रकाशक, मुद्रक, पूजक, पाठक सभी को हमारा आशीर्वाद।

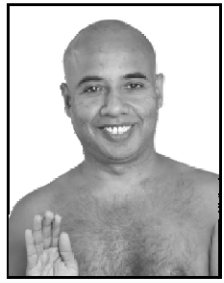

-आचार्य गुप्तिनंदी
धर्मतीर्थ 'श्रुत पँचमी'

आचार्य शांतिसागरजी शांति के मसीहा

तुभ्यम् नमोऽस्तु चारित्र चक्री,
तुभ्यम् नमोऽस्तु जिन धर्म मूर्ति।
तुभ्यम् नमोऽस्तु हे क्रांतिकारी !,
तुभ्यम् नमोऽस्तु हे शांतिसिंधु !।।

आचार्य श्री शांतिसागरजी ऋषिवर के विषय में हर साधक ने अपने उद्‌गार व्यक्त किये हैं। हर भक्त ने अपनी विनयांजलि रखी है। गुरुवर का बचपन ही वैराग्यमय था। जब घर परिवार छोड़कर मुनि बन गये। तब जो उन्होंने धर्म की क्रांति पूरे विश्व में की है, उसका मैं कुछ भी वर्णन नहीं कर सकती। उन आचार्य भगवन् का बहुत बड़ा उपकार संतों पर है, श्रावकों पे है। संत भी उनके कारण बने और श्रावक भी उन्हीं के कारण से जैन बने। उत्तर भारत में तो संतों के दर्शन दुर्लभ हो गये थे। जब आचार्यश्री ने दक्षिण से उत्तर भारत की ओर विहार किया तब ही यहाँ पर भक्तों में धर्म के प्रति आस्था जगी, हम जैन हैं। हमारे दिगम्बर मुनि ऐसे होते हैं ये सब आचार्यश्री ने जगह-जगह विहार करके बताया। जन-जन को जगाया। उन्होंने हमें जो आर्षमार्ग दिया है। वो स्वयं उसका पालन करते थे। स्वयं आचार्य भगवन हर दिन भगवान का पंचामृत अभिषेक देखकर ही आहारचर्या के लिये उठते थे।

जिनवाणी (आगम) माता को भंडारगृह के ताले खुलवाकर और कही तो जिनवाणी माता को दिवाल से बाहर निकलवाकर ग्रंथ छपवाये। आचार्यश्री के कारण ही हमें हमारे आचार्यों के द्वारा लिखित प्राचीन ग्रंथ प्राप्त हुये। आचार्य भगवन ने सभी जगह जाकर धर्म के लिये बहुत क्रांति की। पूरे भारत में दिगम्बर मुनिराज विहार कर सकते हैं। ऐसा संविधान पास कराया। श्रावक और मुनि धर्म निर्बाध रूप से चलाया, श्रावक होंगे तो साधु बनेंगे और साधु होंगे तो श्रावक अपने धर्म का पालन करेंगे। श्रावक और साधु ही जैन धर्म का रथ पंचम काल के अंत तक चला सकते हैं। 36 वर्ष तक आचार्यश्री ने साधना की, हजारों व्रत उपवास किये। जब आचार्यश्री का अंतिम समय

निकट आया तब कुंथलगिरी में गुरुवर ने चातुर्मास किया। 36 दिन के उपवास किये। भादों शुक्ला दूज के दिन आचार्य भगवन ने इस नश्वर देह को णमोकार मंत्र बोलते हुये एवं सुनते हुए त्याग दिया, समाधिमरण किया।

आचार्यश्री की समाधि में हजारों, लाखों भक्त दर्शन करने पहुँचे। सिद्धक्षेत्र पर आचार्यश्री की समाधि हुई। निकट भविष्य में आचार्य भगवन अरहंत सिद्धपद को प्राप्त करेंगे। उनका क्रांतिकारी जीवन बहुत विशाल है। उनके जीवन पर जितना लिखे उतना कम है। उनके गुणों को गाने में एवं लिखने में मेरी कलम समर्थ नहीं है। उनके जीवन पर आधारित यह छोटा सा लघु शांतिसागर विधान लिखा। इस विधान को लिखने की प्रेरणा देने वाले क्षुल्लक सुधर्मगुप्तजी को आशीर्वाद, समाधिरस्तु।

आचार्यश्री कुंथुसागरजी गुरुदेव, आचार्यश्री कनकनंदीजी गुरुदेव एवं आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव, तीनों गुरुदेव के आशीर्वाद से मैंने यह विधान लिखा। सभी गुरुओं के चरणों में मेरा नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु...

इस विधान का संपादन भी आचार्यश्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने किया है। विधान में कुल 36 अर्घ है और एक पूर्णार्घ है।

इस विधान को लिखने में त्रुटि हुई हो तो पाठक गुणग्रहण का भाव रखें। विधान करके आत्मिक शांति प्राप्त करें। पुनश्चः सभी भगवंतों को नमोऽस्तु।

सभी आचार्यों को नमोऽस्तु।

–आर्यिका आस्थाश्री माताजी

शांतिसागर विधान मंडल

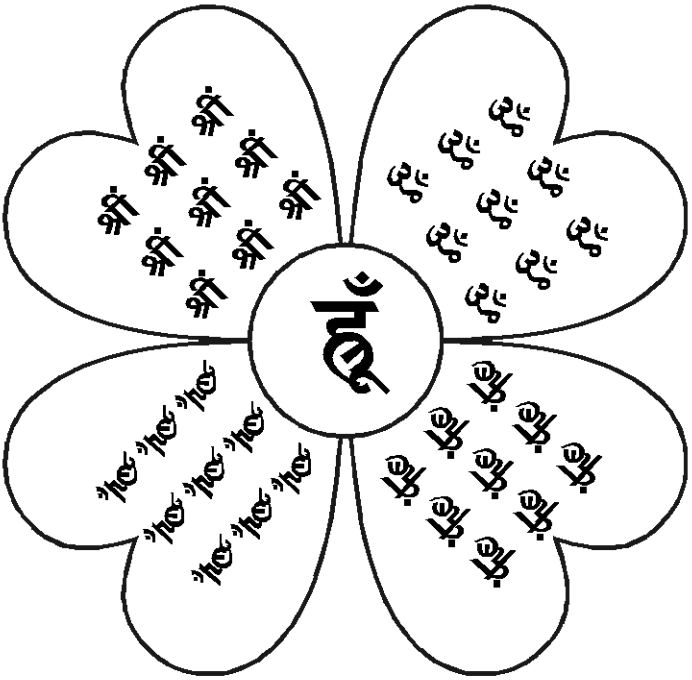

चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी विधान

(गीता छंद)

श्री शांतिसागर ऋषिवरा, हम आपको वंदन करें।
हाथों में भर पुष्पांजलि, हम आपका अर्चन करें॥
मुनि धर्म को फिर से चलाया, आपने संसार में।
हम दर्श गुरु के कर रहे, ये आपका उपकार है॥

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

भर-भर के कुंभ नीर के गुरुवर को चढ़ायें।
त्रय रोग नशाने गुरु की भक्ति रचायें॥
आचार्य शांति सिंधु की हम अर्चना करें।
हे क्रांतिकारी ! आपकी हम वंदना करें॥1॥

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन चढ़ायें आपको भव ताप नशाने।
हम आपके चरणों में आये पाप नशाने॥ आचार्य... ॥2॥

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखंड मोतियों की थाल चढ़ायें।
उत्तम व्रतों को पाने हेतु भक्ति रचायें ॥ आचार्य... ॥3॥

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार पुष्प की हम माल बनायें।
चरणारविंद में गुरु के नित्य चढ़ायें।।
आचार्य शांति सिंधु की हम अर्चना करें।
हे क्रांतिकारी ! आपकी हम वंदना करें।।4।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नमकीन मीठे शुद्ध हम पकवान बनायें।
हम रोग क्षुधा नाशने गुरुवर को चढ़ायें।। आचार्य... ।।5।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आरती करें सदैव आपकी गुरु।
ज्ञानी बने हम आपके समान ही गुरु।। आचार्य... ।।6।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चा करें हम धूप से शुभ भक्ति भाव से।
गुणगान नृत्य हम करें हे देव ! चाव से।। आचार्य... ।।7।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुरंगी मधुर श्रेष्ठ फल की थाल सजायें।
हम भी बने मुनिराज यही भावना भायें।। आचार्य... ।।8।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध शालि पुष्प चरु दीप धूप ले।
फल अर्घ्य आदि से गुरु के पाद पूज लें।। आचार्य... ।।9।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– शांति सिंधु आचार्य का, करते भव्य विधान।
गुरुवर का गुणगान कर, पायें मोक्ष महान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

भोज ग्राम के येलगुल में, जन्मे गुरुवर प्यारे।
षाढमास षष्ठी कृष्णा को, निश में जन्में न्यारे॥
शांतिसिंधु आचार्य गुरु का, हम विधान करते हैं।
तुमने जग को राह दिखाई, हम तुमको भजते हैं॥1॥

ॐ ह्रूँ जन्म मंगल रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भीमगौंडा पाटिल के सुत की, महिमा अद्भुत न्यारी।
सत्यवती माँ के नंदन को, वंदन है सुखकारी॥ शांतिसिंधु..॥2॥

ॐ ह्रूँ वंदन रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम सातगौंडा सुखकारी, सब के मन को भाये।
सत्य धर्म की राह चलूँगा, मन में भाव समाये॥ शांतिसिंधु..॥3॥

ॐ ह्रूँ सत्यपथ रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गये पाठशाला में गुरुवर, शिक्षक उन्हें पढ़ाये।
क्लास तीसरी पढ़कर गुरुवर, घर में ज्ञान बढ़ायें॥ शांतिसिंधु..॥4॥

ॐ ह्रूँ विद्यादि रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व पुण्य से पाई विद्या, बुद्धि विशद बनाई।
मात-पिता तव बुद्धि को लख, शादी तुरत रचाई॥ शांतिसिंधु..॥5॥

ॐ ह्रूँ बुद्धि विशारद रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाल विवाह किया जिसके संग, वो परलोक सिधाये।
बाल उमर से तुम वैरागी, श्रुत अभ्यास बढ़ाये॥ शांतिसिंधु..॥6॥

ॐ ह्रूँ श्रुत अभ्यास रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशु पक्षियों के संग गुरुवर, करते प्रेम अनोखा।
दाना चुगते पक्षी को वे, नीर पिलाते चोखा।।
शांतिसिंधु आचार्य गुरु का, हम विधान करते हैं।
तुमने जग को राह दिखाई, हम तुमको भजते हैं।।7।।

ॐ ह्रूँ करुणा वात्सल्य रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इकतालिसवें वर्ष गुरु ने, क्षुल्लक दीक्षा पायी।
गिरनारी में जाकर तुमने, ऐलक दीक्षा पायी।। शांतिसिंधु..।।8।।

ॐ ह्रूँ अणुव्रत रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक येरनाल में, देवेन्द्रकीर्ति करायें।
दीक्षाकल्याणक के शुभ दिन, तुमको श्रमण बनायें।। शांतिसिंधु..।।9।।

ॐ ह्रूँ श्रमण रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ बीस मुनि व्रत को पालें, मोक्षमार्ग अपनायें।
आदि वीर का यही रूप था, जन-जन को दिखलायें।। शांतिसिंधु..।।10।।

ॐ ह्रूँ महाव्रत धारकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिसागर नाम आपने, मुनि दीक्षा से पाया।
भक्तों ने भक्ति से गुरु का, तब जयकार लगाया।। शांतिसिंधु..।।11।।

ॐ ह्रूँ शांतिप्रदायकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ अक्षुण्ण चला है, शांतिनाथ से जैसे।
तुमसे मुनिराजों का दर्शन, मिला है हमको वैसे।। शांतिसिंधु..।।12।।

ॐ ह्रूँ मुनिदर्शन रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोन्नूर की एक गुफा में, गुरुवर ध्यान लगायें।
सर्प आपके तन पे लिपटा, तनिक डिगा ना पाये।। शांतिसिंधु..।।13।।

ॐ ह्रूँ ध्यान रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो भवि प्राणी गुरु चरणों में, क्षुल्लक दीक्षा पाये।
समडोली में शांतिसागर, जैनाचार्य कहाये।। शांतिसिंधु..।।14।।

ॐ ह्रूँ छत्तीसगुण धारकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण के हर नगर- ग्राम में, गुरुवर अलख जगायें।
करते धर्म प्रचार निरंतर, संघ वृद्धि हो जाये।।
शांतिसिंधु आचार्य गुरु का, हम विधान करते हैं।
तुमने जग को राह दिखाई, हम तुमको भजते हैं॥15॥

ॐ ह्रूँ धर्म प्रचारकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य योग से संघ सहित गुरु, सम्मेदाचल जायें।
भक्त भक्ति से गुरुवर के संग, प्रभु के दर्शन पायें॥ शांतिसिंधु..॥16॥

ॐ ह्रूँ तीर्थ भक्त रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारत भर में घूमें गुरुवर, धर्म क्रांति वे लायें।
भूले भटके हर भक्तों को, धर्म सूत्र सिखलायें॥ शांतिसिंधु..॥17॥

ॐ ह्रूँ धर्मक्रांति रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप परीक्षक आलोचक से, तनिक नहीं घबराये।
उनको भी मुनि दीक्षा देकर, सम्यक् राह बतायें॥ शांतिसिंधु..॥18॥

ॐ ह्रूँ मुनिधर्म देशकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे श्रावक उत्तम साधु, गुरुवर आप बनायें।
श्रमणधर्म प्रारम्भ हुआ फिर, जग में उत्सव छाये॥ शांतिसिंधु..॥19॥

ॐ ह्रूँ जिनधर्मोपदेशकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई हुए उपसर्ग गुरु पे, पर समता ना छोड़ें।
मानव क्या तिर्यंच जीव भी, चरणन् आये दौड़े॥ शांतिसिंधु..॥20॥

ॐ ह्रूँ सर्व उपसर्ग जिताय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तिस पच्चीस आठबीस गुण, श्री गुरुवर जी पालें।
पंचाचारी आत्म बिहारी, हम उनके गुण गालें॥ शांतिसिंधु..॥21॥

ॐ ह्रूँ पंचाचारी गुण धारकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा-शिक्षा-प्रायश्चित दे, गुरु का धर्म निभायें।
जिनवाणी घर-घर पहुँचाने, शास्त्र महत्व बतायें॥ शांतिसिंधु..॥22॥

ॐ ह्रूँ परमेष्ठी रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीवालों में गलित शास्त्र को, देख गुरु अकुलाये।
जिनवाणी का रक्षण करने, गुरुवर अलख जगायें॥
शांतिसिंधु आचार्य गुरु का, हम विधान करते हैं।
तुमने जग को राह दिखाई, हम तुमको भजते हैं॥23॥

ॐ ह्रूँ श्रुतभक्ति रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रंथ छपे तब जिन मंदिर व, तीर्थों में रखवाये।
शास्त्र पठन की परिपाटी अब, श्री गुरुदेव बनायें॥ शांतिसिंधु..॥24॥

ॐ ह्रूँ ग्रंथ भक्ति रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी माँ की रक्षा हित, उनने शास्त्र छपाये।
भारत के सब प्रांत नगर में, उनको वे पहुँचायें॥ शांतिसिंधु..॥25॥

ॐ ह्रूँ शास्त्र प्रकाशकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिल्ली में सरकारी बंधन, उनको रास न आये।
सभी देश में श्रमण गमन हो, गुरु आवाज उठायें॥ शांतिसिंधु..॥26॥

ॐ ह्रूँ मुनिमार्ग संरक्षकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम, सर्व दिशा में जायें।
जैन धर्म जिनवाणी गुरु की, महिमा आप बतायें॥ शांतिसिंधु..॥27॥

ॐ ह्रूँ धर्म प्रकाशकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस युग के महावीर आप हो, धर्म ध्वजा फहरायें।
जिन भक्तों में नई चेतना, गुरुवर आप जगायें॥ शांतिसिंधु..॥28॥

ॐ ह्रूँ धर्म चेतना जागृताय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उपवास कठिन तप साधें, हे सूरीश्वर ! तुमने।
महातपस्वी समता धारी, श्रमण बनायें तुमने॥ शांतिसिंधु..॥29॥

ॐ ह्रूँ महातप साधकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक प्रभु की पूजा, जीर्णोद्धार करायें।
पंचामृत अभिषेक देखकर, नित चर्या को जायें॥ शांतिसिंधु..॥30॥

ॐ ह्रूँ धर्म सूर्याय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि में गुरु, चातुर्मास रचायें।
छत्तीस वर्ष बिताये मुनि बन, आत्मिक शांति पायें॥
शांतिसिंधु आचार्य गुरु का, हम विधान करते हैं।
तुमने जग को राह दिखाई, हम तुमको भजते हैं॥31॥

ॐ ह्रूँ महाश्रमणाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस उपवासों को साधा, छत्तीस गुण के धारी।
श्रेष्ठ समाधि करी आपने, पूजें सब नर-नारी॥ शांतिसिंधु..॥32॥

ॐ ह्रूँ समाधि साधकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसा नाम आपका भगवन, वैसा कार्य किया है।
मृत्यु महोत्सव कुंथलगिरी कर, स्वर्ग प्रयाण किया है॥ शांतिसिंधु..॥33॥

ॐ ह्रूँ मृत्यु महोत्सवाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ साधना गुरु आपकी, उत्तम हुई समाधी।
जो जन गुरु को पूजें निशदिन, मिट जाये सब व्याधी॥ शांतिसिंधु..॥34॥

ॐ ह्रूँ व्याधि विनाशकाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन तपस्या गुरु आपकी, निश्चित कर्म नशाये।
तीर्थंकर पदवी तुम पाओ, यही भावना भायें॥ शांतिसिंधु..॥35॥

ॐ ह्रूँ कठिन तप रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति सागर-शांति सागर, नाम लगे अति प्यारा।
आत्म शांति को पाने गुरुवर, बोलें हम जयकारा॥ शांतिसिंधु..॥36॥

ॐ ह्रूँ निजात्म शांति रूपाय सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ने छब्बीस मुनि बनाये, चार आर्यिका माता ।

सोलह ऐलक अठबिस क्षुल्लक, और क्षुल्लिका माता ।। शांति सिंधु... ।।37।।

ॐ ह्रूं मुनि आर्यिका आदि चतुर्विध दीक्षा प्रदायकाय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई श्रावक तो व्रती बने तब, नारी बन व्रतिकायें ।

पूजा करते सभी आपकी, दृढ़ हो नियम निभायें ।। शांति सिंधु.... ।।38।।

ॐ ह्रूं श्रावक श्राविका व्रत प्रदायकाय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर भारत में गुरु आये, तीर्थ वंदना करने ।

श्री सम्मेद शिखर जी जाये, प्रभु की रज शिर धरने ।। शांति सिंधु.... ।।39।।

ॐ ह्रूं सम्मेद शिखर तीर्थ वंदनाय श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह चौमासे गुरुवर ने, उत्तर प्रांत रचाये।

पैंतीस सहस्र किलोमीटर तक, गुरु पद भ्रमण रचायें।। शांतिसिंधु... ।।40।।

ॐ ह्रूं जिन धर्म प्रवर्तकाय सूरि श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चातुर्मास हुये इक्तालिस, सब इक से इक बढ़कर ।

भारत भू गुरुवर को पूजें, सब जैनी जैनेतर।। शांतिसिंधु... ।।41।।

ॐ ह्रूं धर्म मार्ग प्रशस्तकराय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह निष्क्रीड़ित किया गुरु ने, उत्तम तप अपनाया।

ऐसे गुरु को हम सब पूजें, जिनने तप सिखलाया ।। शांतिसिंधु.... ।।42।।

ॐ ह्रूं सिंहनिष्क्रीडित व्रत धारकाय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बेला तेला किये अनेकों, और कवल चंद्रायण ।

नौ हजार नौ सौ अड़तीस कुल, श्री गुरुवर के अनशन।। शांतिसिंधु.... ।।43।।

ॐ ह्रूं नव सहस्र अडत्रिंशत अधिक नव शत अनशन धारकाय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्निस सौ पच्चिस में गुरुवर, श्रवण बेलगुल जायें ।

बाहुबली अभिषेक महोत्सव, गुरु देखन को आये ।। शांतिसिंधु.... ।।44।।

ॐ ह्रूं महामस्तकाभिषेक महोत्सवे सानिध्य प्रदायकाय श्री सूरी शांतिसागराय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

बारह वर्षी श्रेष्ठ समाधि, गुरु गजपंथा लेते ।

त्याग साधना बढ़ा गुरुवर, धर्म देशना देते।। शांतिसिंधु.... ।।45।।

ॐ ह्रूं उत्कृष्ट सल्लेखना धारकाय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ लाख श्रावक बंधु को, जनेऊ पहना देते।

सप्त व्यसन का त्याग कराते, अष्ट मूल गुण देते।। शांतिसिंधु.... ।।46।।

ॐ ह्रूंअष्ट मूलगुण श्रावक व्रत प्रदायकाय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम संदेशा गुरुवर का, प्राणी मात्र ने पाया।

डरो नहीं रत्नत्रय धारो, गुरु ने यही बताया।। शांतिसिंधु.... ।।47।।

ॐ ह्रूं अंतिम उपदेश प्रदायकाय सूरी श्री शांति सागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति सिंधु की भक्ति अर्चना, दुःख संकट विनशायें ।

गुरु नाम का मंत्र जपे हम, शांति आत्म में आये।। शांतिसिंधु.... ।।48।।

ॐ ह्रूं सर्व कार्य सिद्धि प्रदायकाय सूरी श्री शांतिसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

तुम चारित्र चक्रवर्ती हो, मुनि चरित्र प्रगटाया।

ऐसे शांतिसागर गुरु को, हमने शीश झुकाया ।।

भारत भर में धर्मक्रांति कर, धर्म ध्वजा फहरायें।

उनको श्रीफल अर्घ्य ध्वजा ले, हम पूर्णार्घ चढ़ायें ॥

ॐ ह्रूं चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महामुनिराज चरणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिसिंधु गुरुदेव के चरणों में जलधार।

हम भी गुरु तुम सम बने, इस हित शांतिधार ।।

शांतये शांतिधारा

दोहा- भरत क्षेत्र के पुष्प की, चढ़ा रहे हम माल।

चक्रवर्ती चारित्र के, तुम्हें नमावे भाल ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र - ॐ ह्रूं चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागराय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- शांतिसिंधु गुरुदेव की, पढ़ें भक्त जयमाल।
गुणसागर गुरु आप हो, गायें हम गुणमाल॥

(चौपाई)

शांतिसागर गुरु हमारे, आये हम गुरु द्वार तुम्हारे।
जयमाला श्रद्धा से गायें, त्रय योगों से शीश झुकायें॥1॥

भोज ग्राम में जन्म लिया है, सारे जग को धन्य किया है।
पिता भीमगौंडा के प्यारे, सत्यवती माँ के सुत न्यारे॥2॥

नाम सातगौंडा मनहारा, मात-पिता को लगता प्यारा।
क्षुल्लक-ऐलक-दीक्षा पाये, मुनि दीक्षा के भाव जगायें॥3॥

श्री देवेन्द्रकीर्ति मुनिराया, उनसे मुनि दीक्षा व्रत पाया।
मुनि शांतिसागर कहलाये, जग में शांतिसुधा बरसायें॥4॥

जैन धर्म में क्रांति लाये, सब भक्तों को आप जगायें।
सब भक्तों में भक्ति जागी, गुरु चरणों से प्रीति लागी॥5॥

भारत भर में भ्रमण किया था, मुनिव्रत का जयघोष किया था।
नग्न दिगम्बर मुद्रा धारी, पूजा करते सब नर-नारी॥6॥

पद विहार गुरु करते जायें, नई चेतना जग में लायें।
भारत भू संतों की धरती, मुनि व आचार्यों की धरती॥7॥

तप व मोक्ष भूमि मुनियों की, त्यागी व्रती महा गुणियों की।
संविधान ये पास कराया, दिल्ली शासन नत हो आया॥8॥

सर्व शास्त्र भाषा के ज्ञाता, श्रमण मार्ग के भाग्य विधाता।
करी तपस्या गुरु ने भारी, गुरु की महिमा जग में न्यारी॥9॥

जन-जन पे उपकार किया है, सबको सम्यक मार्ग दिया है।
हे गुरु ! तव गुण गा ना पायें, तव उपकार चुका ना पायें॥10॥

गुरुवर कुंथलगिरि में आये, अंतिम चातुर्मास रचायें।
गुरु का आतम बल बढ़ जाये, मरण समाधि व्रत अपनाये॥11॥

व्रत उपवास नियम नित पालें, अति प्रभावना करने वाले।
श्रेष्ठ समाधि कर गुरु जायें, भक्त महोत्सव सदा मनायें॥12॥

यही भावना हम भी भायें, गुरु सम गुण उत्तम हम पायें।
ये विधान हम करें करायें, गुरु आशीष सदा हम पायें॥13॥

हे गुरुवर ! हम तुमको ध्यायें, तव चरणों में शीश झुकायें।
गुरुवर का जयकार लगायें, गुरु की यशकीर्ति फैलायें॥14॥

नाम आपका है सुखकारी, शांतिनाथ सम शांतिकारी।
'आस्था' से हम शीश झुकायें, गुप्ति समिति संयम अपनायें॥15॥

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महामुनिराज चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिसागर शांति दो, करें भक्त फरियाद।
'आस्था' से हम माँगते, मंगल आशीर्वाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रशस्ति

दोहा

ऋषभदेव से वीर तक, चौबीसों भगवान।
जिनवाणी गणधर प्रभु, इनको कोटि प्रणाम॥1॥

इस युग के महावीर हैं, शांतिसागर नाम।
परम पूज्य ऋषिराज को, कोटि-कोटि प्रणाम॥2॥

महावीर कुंथु कनक, सबको करूँ प्रणाम।
गुप्तिनंदी गुरुदेव को, शत-शत बार प्रणाम॥3॥

शांति सिंधु के नाम पे, लिखा मनोज्ञ विधान।
पुण्य तिथि पे पूर्ण कर, शांतिसिंधु विधान॥4॥

गुप्तिनंदी गुरुदेव ने, संपादन कर भव्य।
सरल श्रेष्ठ सुन्दर किया, हम पूजें नित भव्य॥5॥

पंचम युग के अंत तक, जग लेगा तुम नाम।
गुरु नाम नित शांति दे, गुरुवर तुम्हें प्रणाम॥6॥

गुरुवर तेरे नाम से, मिलती शांति अपार।
'आस्था' से हम नमन कर, गुप्ति त्रय मन धार॥7॥

॥ इति अलम्॥

आचार्य शांतिसागर जी की आरती

(तर्ज : अंबे जगदम्बे माता)

जय-जय गुरु शांतिसागर, तुम हो गुरु ज्ञान उजागर।
हम सब उतारें तेरी आरती, हो गुरुवर... हम सब...

भीमगौंडा पाटिल के नंदन, सबका मन हर्षाये-2
सत्यवती माता के ललना, सबके मन को भाये-2
तुम हो जन-जन के प्यारे, नाना नानी के दुलारे॥
हम सब..॥1॥

सातगौंडा पाटिल बचपन से, प्रभु के पद अनुरागी-2
पशु-पक्षी से प्यार करें नित, घर से ही वैरागी-2
दीक्षा ले गुरु हर्षाये, जन-जन को आप जगायें॥
हम सब..॥2॥

जब आचार्य बने श्री गुरुवर, श्रावक मुनि बन जाये-2
बन चारित्र चक्रवर्ती गुरु, चहुँदिश ध्वज फहराये-2
मुनियों का मार्ग बताये, गुप्ति समिति अपनाये॥
हम सब..॥3॥

कुंथलगिरी में आये गुरुवर, चातुर्मास रचाने-2
सिद्धक्षेत्र में करी समाधी, हम आये गुण गाने-2
'आस्था' से आरती गायें, गुरु को हम शीश झुकायें॥
हम सब..॥4॥

***

आचार्य शांतिसागर चालीसा

दोहा– सब तीर्थंकर को नमें, और शारदा मात।
पंच परम परमेष्ठी का, गुण गायें दिन रात॥
श्री शांतिसागर गुरु, जैन धर्म की शान।
चालीसा गुरु का पढ़ें, करते हम गुणगान॥

चौपाई

जय–जय गुरु श्री शांतिसागर, नमन तुम्हें है शांतिसागर।
जय–जय गुरुवर गुण रत्नाकर, ज्ञान रश्मि के आप दिवाकर॥1॥
चालीसा गुरु का हम गायें, गुरु चरणों में शीश झुकायें।
धन्य हुये हम तुमको पाकर, मुनि मुद्रा तुम किये उजागर॥2॥
भोज ग्राम कर्नाटक प्यारा, उसमें जन्मा धर्म सितारा।
पिता भीमगौंडा कहलाये, सत्यवती माँ तुम्हें झुलायें॥3॥
नाम सातगौंडा कहलाया, तुमने शांतिपथ दिखलाया।
सत्य धर्म जिन धर्म हमारा, जैनधर्म था तुमको प्यारा॥4॥
विद्यालय में विद्या पाये, क्लास तीसरी पढ़कर आये।
स्वयं पढ़े विद्या बढ़ जाये, प्रखर बुद्धि ज्ञानी बन जाये॥5॥
सबके संग था प्रेम तुम्हारा, करूणा दया मैत्री भंडारा।
छोटे–बड़े सभी जन चाहें, सभी प्रेम से पास बिठायें॥6॥
जब भी तुम खेतों में जाते, पशु–पक्षी को नीर पिलाते।
उनको दाना चुगने देते, पीने को पानी रख देते॥7॥
उसी समय करुणा फल पाते, सबसे अधिक धान्य तुम पाते।
बाल उम्र में ब्याह हुआ था, नाम मात्र का ब्याह हुआ था॥8॥
वो बचपन में स्वर्ग सिधारे, गुरुवर ब्रह्मचर्य व्रत धारे।
षट् कर्त्तव्य आप नित करते, दान धर्म पूजा नित करते॥9॥
गुरुओं को आहार कराते, नदि में गुरु को पार कराते।
यही भावना निशदिन भाते, गुरु ही हमको पार लगाते॥10॥

हे गुरुवर ! तुम पार लगाना, मुझको मोक्षमहल पहुँचाना।
श्री देवेन्द्रकीर्ति मुनि आये, उनसे क्षुल्लक दीक्षा पाये॥11॥
क्षुल्लक बनकर नाम कमाये, जल्दी ऐलक पदवी पाये।
ऐलक से मुनिवर बन जाये, शांतिसागर नाम कहाये॥12॥
मंदिर का निर्माण कराये, आप चलाचल तीर्थ बनाये।
श्रेष्ठ चतुर्विध संघ बनाया, संयम का अभ्यास कराया॥13॥
ताम्र पत्र पे ग्रंथ छपाये, अटल सुरक्षा आप करायें।
सिंह वृत्ति को तुमने धारा, जग में गूँजा जय-जयकारा॥14॥
वे मुनिवर आचार्य कहाये, कई दीक्षा दे मुनि बनाये।
दक्षिण से उत्तर में आये, संतों की महिमा दिखलाये॥15॥
मुनि मुद्रा लख सब चकराये, प्रश्न पूछ वे मुनि बन जाये।
गाँव नगर शहरों में जाये, कई श्रावक को जैन बनाये॥16॥
मुनियों का मुनि धर्म चलाया, भक्तों को जिनधर्म सिखाया।
जिनवाणी जिनग्रंथ छपाये, ग्रंथ सभी मन्दिर पहुँचाये॥17॥
उत्तर भारत जब संघ आये, दिल्ली का शासन हिल जाये।
संविधान यह पास कराये, साधु पे ना नियम लगाये॥18॥
भारत भर में भ्रमण रचाये, जैन धर्म का ध्वज फहराये।
अंत समय कुंथलगिरी आये, यही समाधि मरण रचाये॥19॥
गुरु चारित्र चक्री कहलाये, आर्ष मार्ग सबको सिखलाये।
गुप्ति समिति समता के धारी, जय-जय हो गुरुदेव तुम्हारी॥20॥

दोहा- गुरुवर तेरे नाम का, चालीसा सुखकार।
शांति से क्रांति करी, वंदन बारम्बार॥
गुरुवर के उपकार को, कह न सके हम आज।
'आस्था' से हम यही कहें, हर दिल में तव राज॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूँ शांतिसागर सूरिभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

20वीं सदी के प्रथमाचार्य परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रातः स्मरणीय 108 श्री शान्तिसागरजी (दक्षिण) का जीवन परिचय

जन्म	–	आषाढ़ कृ.6 वि.सं. 1929 ईस्वी 1872, बुधवार।
जन्मस्थान एवं नाम	–	येलगुल (भोजग्राम), कर्नाटक, सातगौंड़ा पाटील (जैन)।
माता–पिता	–	श्रीमती सत्यवती – भीमगौंड़ा पाटील।
क्षुल्लक दीक्षा	–	ज्येष्ठ शु.13 वि.सं. 1972, ईस्वी 1915, उत्तूर ग्राम (कर्नाटक)।
ऐलक दीक्षा	–	गिरनारजी सिद्धक्षेत्र पर, भगवान नेमिनाथ के चरणों में पांचवी टोंक पर।
मुनि दीक्षा	–	फाल्गुन शु.14 वि.सं. 1976, ईस्वी 1920 यरनाल ग्राम कर्नाटक।
क्षुल्लक एवं मुनि दीक्षा गुरु	–	मुनिश्री देवेन्द्र कीर्तिजी महाराज।
आचार्य पद	–	आश्विन शु.11 वि.सं. 1981, ईस्वी 1928 समडोली ग्राम में बुधवार के दिन, इसी दिन 2 मुनि दीक्षा, 1 ऐलक दीक्षा एवं 1 क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की।
दीक्षित शिष्य	–	26 मुनि, 4 आर्यिका, 16 ऐलक, 28 क्षुल्लक, 14 क्षुल्लिका और सैंकड़ों व्रती श्रावक रूप चतुर्विध संघ।

चारित्र चक्रवर्ती	–	वि.सं. 1994, ईस्वी 1937, गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में।
उत्तर भारत में मंगल	–	तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की वन्दनार्थ
विहार एवं वर्षायोग	–	मार्गशीर्ष कृ. 1 वि.सं. 1984 ईस्वी सन् 1927 में।
	–	बम्बई के सेठ गेंदनमलजी संघपति की प्रार्थना पर।
	–	उत्तर भारत में सन् 1928 से 11 वर्षायोग सम्पन्न किये।
	–	संयमी जीवन में 35000 मील से अधिक पद विहार किया।
तप साधना	–	सिंहनिष्क्रीड़ित, कवलचन्द्रायण आदि अनेक व्रतों को करते हुए जीवन में कुल 9938 उपवास, रसपरित्याग इत्यादि बहिरंग और अंतरंग तप किये।
कुल वर्षायोग	–	अपने दीक्षित जीवन में 41 वर्षायोग सम्पन्न किये।
विशेष	–	सन् 1925 में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के सम्पन्न होने वाले 'महामस्तकाभिषेक' में सान्निध्य प्रदान कियाथ। श्रवणबेलगोला से ही आप 'गुरुणांगुरु' कहे जाने लगे।
	–	जिनालय रक्षार्थ 3 वर्ष 12 दिन तक अन्न ग्रहण का त्याग कर धर्मरक्षा एवं संस्कृति की रक्षा की।

– ताड़पत्रों पर लिखित षट्खंडागम और महाबन्ध ग्रन्थों की कीटों से रक्षा हेतु उन ग्रन्थों को ताम्रपत्रों पर अंकित कराया।

– लगभग 8 लाख श्रावकों को मूलगुण सहित यज्ञोपवीत प्रदान की।

उत्कृष्ट सल्लेखना ग्रहण – 24 अक्टूबर, वि.सं. 2008 में 12 वर्ष की उत्कृष्ट सल्लेखना गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर ग्रहण की।

स्वकीय आचार्यपद प्रदान – 26 अगस्त 1955 को पत्र लिखाकर अपने प्रथम निर्ग्रन्थ शिष्य मुनिश्री वीरसागरजी को आचार्यपद प्रदान किया।

अंतिम उपदेश – 8 सितम्बर, 1955 को 36 दिवसीय सल्लेखना के अन्तर्गत 26वें दिन 22 मिनिट तक मराठी भाषा में दिया।

सल्लेखना पूर्वक देहविलय– भाद्रपद शु.2, 18 सितम्बर 1955 को प्रातः 6 बजकर 50 मिनिट पर महाराष्ट्र प्रान्त के कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र पर सल्लेखना पूर्वक आपका देह विलय हुआ।

***

प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी महामुनिराज की विभिन्न मुद्राएँ

सर्व उपसर्ग विजेता

क्रूर सिंह भी शान्त भाव धारण कर आचार्यश्री के सम्मुख बैठा है

'केशलोंच' वैराग्यमय क्रिया

भक्तों की अन्तिम देशना

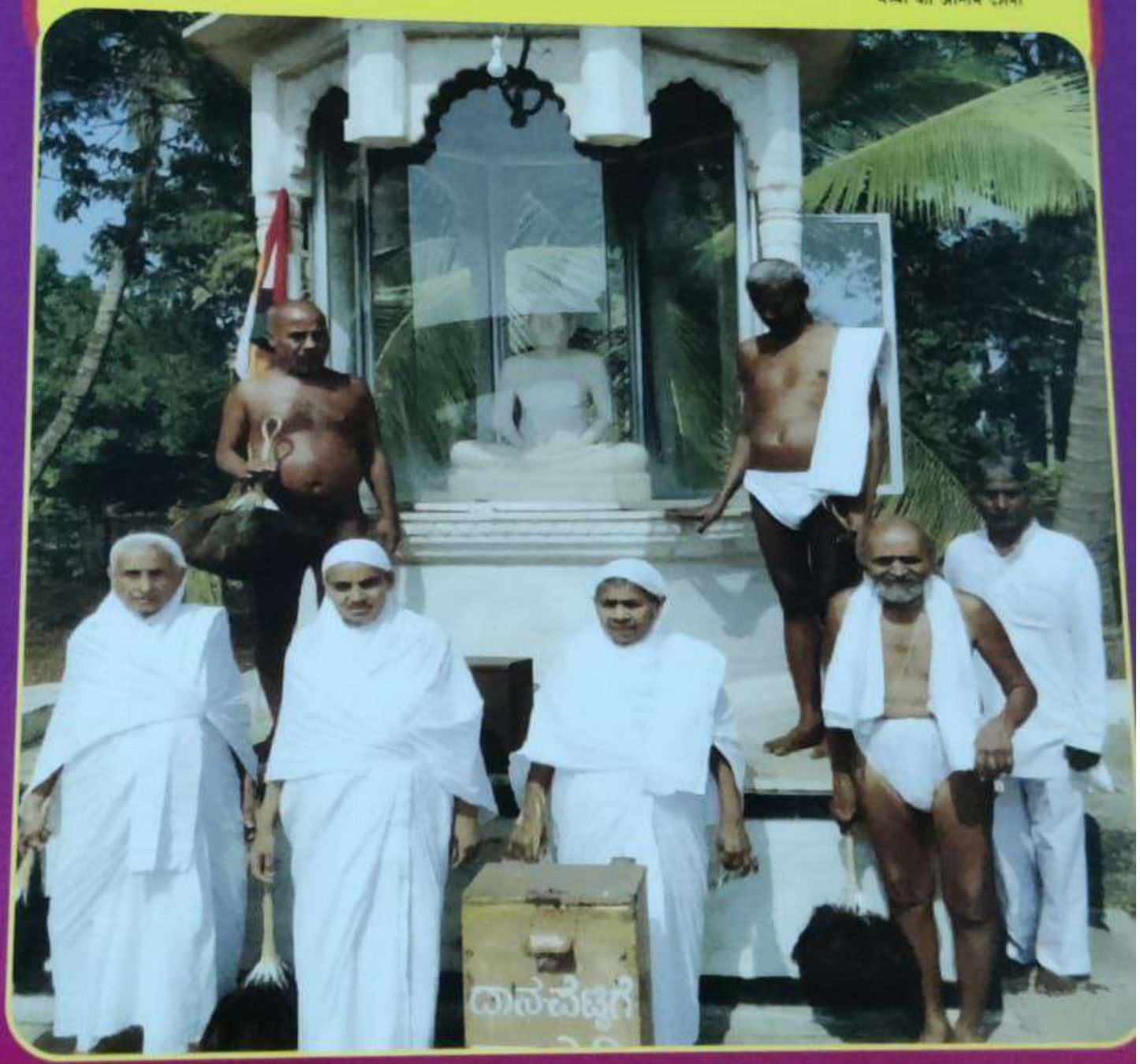

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ